



Beyond Gillette.

*“The third blade is invisible.
It belongs to me.”*

FERDINANDO FREGA
— NANDO THE SCRIBE —

THE GILLETTE QUADRILOGY • VOLUME IV

NAPLES-POST.COM

जिलेट से परे

THE COMPANY · 12

जिलेट चतुष्टयी का चौथा खंड: नेपल्स की एक अंतिम संस्कार कंपनी चलाने के लिए रखा गया एक मैनेजर, जो आखिरकार मुर्दों के लिए जिलेट रेज़र का नुस्खा लिखने लगता है, फिर ट्रैकसूट में उसका अपना अंतिम संस्कार, चेक-इन काउंटरों और ऑनबोर्डिंग प्रक्रियाओं वाला परलोक, एक कंसल्टेंट की नज़र से देखे गए पाँच अरबपतियों के अंतिम संस्कार, और आखिर में अमेरिका में दोबारा जन्म लेने की अर्ज़ी — डिलीवरी पर हस्ताक्षर के साथ।

पुष्पिका

फर्दिनांदो फ्रेगा — लेखक नांदो — पाँचवाँ ब्लेड

व्यवहार संहिता के कथा-अग्रदूत। उन्होंने एक ही विचार के इर्द-गिर्द एक डॉलर का संपादकीय इकोसिस्टम खड़ा किया: वित्त को पैसे की समस्या नहीं है। उसे व्यवहार की समस्या है।

ONEDOLLAR-STORIES इकोसिस्टम के भीतर संपादित और संकलित। डिजिटल संरचना: **NAPLES-POST · NOASPECTTIME · ONEDOLLAR-STORIES**। पहली बार 2026 में प्रकाशित। डिजिटल पठन के लिए अनुकूलित एक साफ़, आधुनिक टाइपोग्राफ़िक लेआउट में संयोजित। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित।

कॉपीराइट सूचना

© 2026 फर्दिनांदो फ्रेगा। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन के किसी भी अंश को लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जिसमें फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियाँ शामिल हैं, पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय आलोचनात्मक समीक्षाओं में शामिल संक्षिप्त उद्धरणों के और कॉपीराइट क़ानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक

उपयोगों के। इस कृति का अनधिकृत उपयोग, पुनरुत्पादन या वितरण निषिद्ध है।

संपादकीय टिप्पणी

यह जिलेट चतुष्टयी का चौथा और अंतिम खंड है।

फर्दिनांदो फ्रेगा द्वारा — लेखक नांदो।

पूरा क्रम:

खंड I — तीन ब्लेड। एक जिलेट। (2026) naples-post.com

खंड II — ब्रांड नैरेटिव जिलेट। (2026) naples-post.com

खंड III — असंभव जिलेट। (2026) naples-post.com

खंड IV — जिलेट से परे। (2026) naples-post.com

यह खंड कथा को बंद नहीं करता। यह आखिरी दीवार हटा देता है।

पहली काट से पहले

ज़्यादातर लोग अपनी ज़िंदगी उन व्यवस्थाओं की स्वीकृति पाने की कोशिश में बिता देते हैं जिन्हें उन्होंने खुद नहीं बनाया। कॉर्पोरेट व्यवस्थाएँ। संपादकीय व्यवस्थाएँ। सामाजिक व्यवस्थाएँ। पारिवारिक व्यवस्थाएँ।

वे ढल जाते हैं। मोलभाव करते हैं। मान्यता का इंतज़ार करते हैं।

मुझमें वह धैर्य कभी नहीं था।

मेरी ज़िंदगी तीन ब्लेडों ने गढ़ी।

पहला ब्लेड उस आदमी का था जिसने एक ठुकराए हुए विचार को आधुनिक इतिहास के सबसे जाने-पहचाने नामों में से एक बना दिया: **किंग कैंप जिलेट**।

दूसरा मेरे पिता का था — द जिलेट कंपनी के भीतर चालीस साल — जिन्होंने मुझे सिखाया कि अनुशासन चिल्लाता नहीं; वह नाप-तौलकर साधता है।

तीसरा अदृश्य है। वह मेरा है। वह उद्योगों, पहचानों, देशों, असफलताओं, सफलता, लेखन, खामोशी को चीरता चला जाता है — और उन व्यवस्थाओं को भी जो आज तक नहीं जानतीं कि मुझे कहाँ रखें।

यह किताब सफलता का जश्न नहीं है। यह संस्मरण नहीं है। यह व्यापार की मार्गदर्शिका नहीं है। यह स्वीकृति माँगता साहित्य नहीं है।

यह उस चीज़ का दस्तावेज़ है जो तब होती है जब एक आदमी यह पूछना बंद कर देता है कि वह कहाँ का है, और ऐसी संरचनाएँ बनाने लगता है जो यथार्थ को उसे स्वीकार करने पर मजबूर कर दें।

कुछ नाम उत्पाद बेचते हैं। कुछ नाम मिट जाते हैं। कुछ नाम हाथ के चले जाने के बहुत बाद तक निशान छोड़ जाते हैं।

यह तीन ब्लेडों की कहानी है। और इसकी भी कि एक नाम कभी काफ़ी क्यों नहीं था।

काम

काम ने मुझे कभी डराया नहीं, कभी दुखी नहीं किया। जो लोग उससे तड़पते थे, उनसे मैं मज़ाक में कहता था: “अगर काम करने का मन हो, तो मुझ पर क्रूद पड़ो।” उनकी बदहाली को झाड़ू-फूँक से भगाने और उन्हें यह दिखाने का एक तरीक़ा कि मेरे लिए काम बस ऐसा मनोरंजन था जिसके पैसे मिलते थे।

वे मुझे देखते और समझ नहीं पाते। मैं हमेशा मुस्कुराता रहता, हमेशा खुश, तब भी जब कागज़ पर मैं दिन में बीस घंटे काम करता था। थकान एक ऐसी विलासिता थी जिसने अब तक मुझे अपनी गिरफ़्त में नहीं लिया था।

समय के साथ मैं समझ गया क्यों: एक दादा जो खनिक थे, एक पिता जो बिना रुके बेचते रहे, और मैं — उनके जीनों की उपज। मैं इससे अलग कुछ हो ही नहीं सकता था।

अपनी रोज़ की बातों में, खुलकर और ऊँची आवाज़ में, मैं ऐलान करता था कि मैं दुनिया की सबसे अच्छी कंपनी में काम करता हूँ। लोग समझते नहीं थे, और मैं समझा नहीं पाता था। पैसा तो बस थिएटर और समस्याओं के बीच रोज़ के एक

प्रदर्शन का नतीजा था — पहला आपको सोचने पर मजबूर करता था, दूसरी आपको हल निकालने पर।

तो मैं दुनिया भर घूमा, पैसठ से ज़्यादा देशों में। कंसल्टेंट और सलाहकार के रूप में मेरी ज़िंदगी रात को छोड़कर हर घंटे को भर देती थी। फिर एक दिन मेरी बेटी ने मुझसे इटली, घर लौट आने को कहा।

मैं ना कैसे कहता। 2020 था। घर में पैर रखते ही फ़ोन बजा — मिलान का कोड नंबर। एक औरत की आवाज़: *"मैं मर्करी उरवल से डॉ. मुसोलीनो बोल रही हूँ। हमारे पास आपका रिज़्यूमे है। हमारे एक क्लाइंट को आप जैसी प्रोफ़ाइल की तलाश है। आप कब उपलब्ध हैं?"*

"माफ़ कीजिए," मैंने कहा, "मैं अभी-अभी दक्षिण अमेरिका से लौटा हूँ और मुझे पक्का नहीं कि मैं समझ पाया कि आपका काम क्या है।"

वह हँसी — तेज़-तर्रार, पैनी — और स्पेनिश पर आ गई: *"Yo busco la cabeza por un trabajo. ¿Entiende?"* मैंने जवाब दिया: *"Claro que sí."* हम दोनों हँस पड़े।

"वीडियो कॉल कब कर सकते हैं?" "ज़ूम पर तय कर लीजिए और मुझे लिंक भेज दीजिए। मैं समय का पाबंद हूँ। मैं गंभीर आदमी हूँ।" "हम जानते हैं कि आप गंभीर हैं। आप जिलेट ग्रुप के बेटे हैं। हमने बरसों उनके साथ काम किया है। लेकिन आप कभी हमारे ज़रिए नहीं आए।" "मुझे नहीं पता था कि आप लोग वहाँ काम करते थे। अब आपसे मिलने का अच्छा मौक़ा है। जो भी हो, यह कामयाबी ही होगी।"

मैंने फ़ोन रख दिया। मेरी बेटी की भौंहें तनी हुई थीं। "क्या हुआ?" "पापा, आप शादीशुदा हैं। अभी-अभी घर में घुसे हैं और अभी से किसी दूसरी औरत से बातें कर रहे हैं?" "जॉर्जिया," मैंने कहा, "पाप बात करने से नहीं होता। सिर्फ़ लेटने से होता है।"

हम हँस पड़े।

वीडियो कॉल

मैं अच्छे कपड़ों में हाज़िर हुआ: दाढ़ी बनी हुई, साफ़-सुथरा, घड़ी, हल्की नीली शर्ट, नीली टाई... और नीचे सिर्फ़ बॉक्सर। मेरी पत्नी ने मेरी पतलून घर में कहीं रख दी थी और मैं दूसरी पतलून निकालने के लिए सूटकेस नहीं खोल पा रहा था।

गर्मी थी। सच कहूँ तो मुझे कोई चिंता नहीं थी। मुझे यक़ीन था कि वह कभी मेरी कमर के नीचे नहीं देखेगी। कम से कम, मैं यही सोच रहा था।

कॉल शुरू हुई। उसने कंपनी के बारे में समझाया: नेपल्स की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी जो पूरे यूरोप में काम करती है, तीन शाखाएँ, 176 गाड़ियाँ, लगभग 120 कर्मचारी। उन्हें मर्चेडाइज़र चैनल और सेल्स फ़ोर्स चलाने के लिए एक मैनेजर चाहिए था।

यह मेरी क्राबिलियत से मेल खाता था। लेकिन जब मैंने पूछा कि वे किस क्षेत्र में हैं, तो वह हँस पड़ी।

“क्या हम एक-दूसरे को नाम से बुला सकते हैं?” “ज़रूर।” “मैं मार्ता हूँ।” “मैं नांदो हूँ।”

“वे अंतिम संस्कार के कारोबार में बाज़ार के अगुआ हैं। उनका नारा है: ‘अगर आप मरते हैं, तो आपका खर्च-मूल्य बढ़ जाता है।’”

मैं ज़रा भी नहीं चौंका। मुझे समझना था कि मर्चेडाइज़रों का मुर्दों से क्या लेना-देना।

असली काम का सार यह था: **मरणोपरांत प्रदर्शन के दृश्य-विन्यास का प्रभारी।**

मेरी समझ में नहीं आया। “माफ़ कीजिए, मुझे करना क्या होगा?” “आप उस स्टाफ़ का समन्वय करेंगे जो मुर्दों को ताबूतों में रखता है, उन्हें कपड़े पहनाता है, साफ़ करता है, और यह पक्का करता है कि वे परिवार के सामने ठीक-ठाक दिखें।”

“और दिलचस्प हिस्सा है पैसा,” उसने आगे कहा। “अगर आप मान जाते हैं, तो पहले महीने €12,500 और खर्चे। कोई कॉन्ट्रैक्ट नहीं। सिर्फ़ रसीद।”

“बिल क्यों नहीं?” “अच्छा सवाल है। उन्होंने यह शब्द अपनी शब्दावली से निकाल दिया है। परिवारों के मुताबिक, ज़्यादातर मृतक ‘fatture’ के शिकार हुए थे — जादू-टोने के, टैक्स के नहीं। तो प्लीज़, बिल का ज़िक्र मत कीजिए।”

“काम की जगह?” “आपकी मर्जी: नेपल्स, बार्सिलोना, लंदन। आप तीन दिन में शुरू कर सकते हैं।”

मैंने सोचा: मैंने सारी ज़िंदगी ज़िंदा लोगों को संभाला है। मुर्दे कितने मुश्किल हो सकते हैं?

हमने विदा ली। मैंने उसे बताया कि मैं नेपल्स जाऊँगा। वह ब्योरा ई-मेल से भेज देगी। मुझे उसे कुछ भी नहीं चुकाना था।

“क्यों नहीं?” “आज मेरी तरफ़ से। अगली बार जब आप मिलान आएँ, मुझे डिनर पर बुलाइए। भले मैं शादीशुदा हूँ, एक रात के लिए मैं खुद को आपके लिए पूरी तरह आज़ाद कर लूँगी।”

मैं यह सोचकर खड़ा हो गया कि कॉल ख़त्म हो गई। वह अब भी ऑनलाइन थी। उसने मुझे मेरे बॉक्सरों में देख लिया।

वह ठहाका मारकर हँस पड़ी। “उम्मीद है आप इस हाल में काम करने का इरादा नहीं रखते। वे आपको इतना पैसा देने को तैयार नहीं हैं — और किसी मैनेजर को अंडरवियर में देखने को भी नहीं।”

डिलीवरी

मैं नेपल्स सेंट्रल स्टेशन पहुँचा। काली जैकेट और टोपी पहने एक आदमी एक तख्ती थामे खड़ा था: **श्री फ्रेगा मैन... एजर।**

मैं कहाँ आ गया हूँ?

उसने मेरा स्वागत किया। “पहले हमें एक डिलीवरी करनी है, फिर हम मुख्यालय चलेंगे।”

हम एक मर्सिडीज़ 300 सीडीआई में बैठे — शव-वाहन वाला संस्करण। मेरी ट्रॉली आगे ही रही। पीछे जगह नहीं थी: वहाँ ताबूत था। उस दिन की हमारी डिलीवरी।

हम मृतक के घर पर रुके। एक औरत ने कहा: “नहीं, इस वक़्त मुर्दा यहाँ नहीं है। वह आपको 38 नंबर पर मिलेगा। यह बारह नंबर है।”

चिनेचिता नहीं। स्पेनिश क्वार्टर्स। ग़रीबी, अपराध, विडंबना, बचे रहने की जद्दोज़हद।

मुझे हँसी आने लगी। मैं जानता था कि यह एक अनोखा अनुभव होगा। लोगों को बताना नामुमकिन — वे कभी यक़ीन नहीं करेंगे।

सही पते पर, ताबूत उतारने से पहले, ड्राइवर ने पूछा: “मुर्दा यहीं है?” औरत ने जवाब दिया: “पार्टी यहीं है।”

“लेकिन उतारने से पहले मुझे यह जानना है कि ताबूत के पैसे चुका दिए गए हैं या नहीं,” उसने आगे कहा।

उसने कंपनी को फ़ोन किया। पुष्टि हो गई। एक *रिवर्स क्लास* ताबूत।

मेरी समझ में नहीं आया। गाड़ी में मैंने ड्राइवर पाओलो से पूछा: “रिवर्स का क्या मतलब है?”

उसने मेरी ओर देखा। “जैसे रिफ़र्बिशड लैपटॉप होते हैं न। एक रीकंडीशन्ड ताबूत। एक साल की वारंटी। हमने इसे एक दूसरे अंतिम संस्कार गोदाम से उठाया, साफ़ किया, अस्तर बदला, कीटाणुरहित किया और फिर से बाज़ार में उतार दिया।”

“और फ़ायदा?” “परिवार आधी क़ीमत देता है। उनकी बचत होती है। नेपल्स में लोग इन बातों का ध्यान रखते हैं।”

मुख्यालय

सड़क किनारे एक मकान, चारों ओर एक विशाल खेत। बगल में दो गोदाम। हर शाम वही ट्रक, वही ड्राइवर, उसी समय, ख़ाली ताबूत पहुँचाता था। इसने मुझे सोचने पर मजबूर किया — पर चिंता में नहीं डाला।

मैंने एक लेबल देखा: *मेड इन ऑस्ट्रिया*। नक़ली। असली मूल: बारह किलोमीटर दूर, *सेर्कोदिल्यानो*।

मालिक मौरिज़ियो मुझे एक बी एंड बी में ले गया। छोटा-सा स्टूडियो, ज़रूरत भर का। एक जवान, भली, मोटी पोलिश नौकरानी जो देखती तो थी पर बोलती नहीं थी।

अगली सुबह मैंने उसे पोलिश में नमस्ते कहा। वह पिघल गई।

मेरी पत्नी का फ़ोन आया। मैंने उसे इस तमाशे के बारे में नहीं बताया। बस इतना कि काम गंभीर है। और मैं हमेशा अपना सब कुछ देता हूँ। काम कोई खेल नहीं है।

किसान को कभी मत बताना कि नाशपाती के साथ चीज़ कितना अच्छा लगता है।

रात 2 बजे पाओलो ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया। “हमें चलना है। एक डिलीवरी है। आपको अपने काम के लिए निर्देश देने होंगे।”

किसी ने मुझे बताया ही नहीं था कि मेरा काम क्या है।

कुछ किलोमीटर। बहत्तर साल का एक आदमी। दिल का दौरा। उसे कपड़े पहनाने थे, साफ़ करना था, तस्वीरों के लिए तैयार करना था।

“इसकी दाढ़ी कैसे बनाएँ?” उन्होंने पूछा।

“डिस्पोज़ेबल जिलेट इस्तेमाल करो।” उनके पास नहीं था। उन्होंने मुझे एक जिलेट रेज़र दिखाया जिसे वे *कुदाल* कहते थे। मैं आखिर कहाँ आ फँसा हूँ।

वे झाग के लिए साबुन की एक टिकिया इस्तेमाल करने ही वाले थे। “शेविंग फ़्रोम क्यों नहीं इस्तेमाल करते?”

“हम प्रोरासो इस्तेमाल करते थे। 600 मि.ली. का ख़ास ऑफ़र, 200 मि.ली. की क्रीम में। पैसे बचे। जब ख़त्म हो गया, तो हम फिर साबुन पर लौट आए।”

“जाओ, इमल्सियोनी सीरीज़ का एक आफ़्टरशेव ख़रीद लाओ। खून का दौरा न हो तो अल्कोहल त्वचा पर टिकता नहीं। यह वाला टिकता है।”

कपड़ों के लिए परिवार ने शादी वाला सूट दिया था। आदमी की ज़िंदगी के दो सबसे अहम दिनों के लिए इस्तेमाल हुआ: शादी और मौत।

हर जगह लोक-दर्शन। तर्क की जगह ज़रूरत ले लेती है। इसीलिए असली मैनेजर दफ़्तरों में नहीं टिकते — वे ज़मीन पर जीते हैं, जहाँ यथार्थ साँस लेता है।

लौटते वक्त्र, एक और फ़ोन। एक और घर। चालीस साल का एक आदमी, कैसर।

“इसकी दाढ़ी कैसे बनाएँ?” नई टीम ने पूछा।

“बाज़ार जाओ। एक मैक3 या एक फ़्यूज़न जिलेट ख़रीदो। उसकी उम्र के आदमी को ऐसा आराम मिलना चाहिए जिसकी कोई मियाद न हो, वह जहाँ भी जा रहा हो। और एक जिलेट शेविंग जेल ले आना। मैं तुम्हें दिखाऊँगा — उँगलियों के पोरों पर ज़रा-सा, और यह व्हिप्ड क्रीम की तरह फूल जाता है।”

उन्होंने निर्देशों का पालन किया। परिवार खुश थे। और मुझे एहसास हुआ: जिलेट छोड़ने के बाद भी मैं उनके उत्पाद बेच रहा था। मैं खुद को रोक नहीं पाता था। माँ हमेशा मेरे साथ है।

अगला दिन

हर दिन अलग-अलग अभिनेताओं वाला एक नाटक लगता था। जीवितों को मौत स्थिर दिखती है — पर वह होती नहीं।

एक महिला दफ़्तर आई। उसकी बुजुर्ग माँ का अभी-अभी देहांत हुआ था। उसकी गुज़ारिश ने मुझे हैरान किया, पर सदमा नहीं दिया।

मृतका तिरासी साल की थीं, और उनकी टाँगों पर बाल फिर से घने उग आए थे। ताबूत बंद करने से पहले वह चाहती थी कि उसकी माँ की शेविंग कर दी जाए।

मैंने महिलाओं की टीम भेजी। वे एक स्त्री-अनुष्ठान के लिए पुरुषों के रेज़र इस्तेमाल करने को तैयार थीं — दो दुनियाएँ जो शायद ही कभी मिलती हैं, अक्सर टकराती हैं।

90 के दशक तक औरतें अपने पतियों के ब्लेड इस्तेमाल करती थीं। फिर बाज़ार ने औरतों के लिए उत्पाद बनाए। तो नई सांस्कृतिक आदतें क्यों न बनाई जाएँ?

मैंने वनेसा से कहा कि सबसे पास की दुकान पर जाए और डिस्पोज़ेबल एजिलिटे ख़रीद लाए — वही जो हम बेचा करते थे — या वीनस जिलेट, और

साथ में सैटिन केयर फ़ोम।

सब कुछ एकदम सही ढंग से हुआ। सात दिन बाद कंपनी ने अपनी सबसे बड़ी समस्या सुलझा ली थी: **जानकारी**।

शनिवार शाम टीमें भुगतान लेने के लिए कतार में लगीं। मैं भी कतार में था। फिर मैं कतार से बाहर निकला, चला गया, और घर अपने परिवार के पास लौट आया।

मैंने उन लोगों को अपना ज्ञान दिया था। और मैंने तय किया कि उसका दाम नहीं लिया जाना चाहिए। जब कोई काम भलाई के लिए किया जाता है, तो पैसे के होने की कोई वजह नहीं रहती।

क्योंकि मैं ऐसा ही हूँ।

नांदो

मेरा अपना अंतिम संस्कार

मैंने हमेशा अंतिम संस्कारों में न जाना ही पसंद किया था। लोगों को इस रूप में याद रखना कि वे कौन थे, न कि इस रूप में कि उन्हें कैसे डिब्बे में बंद करके रवाना किया गया, मुझे ज़्यादा गरिमापूर्ण लगता था। पर इस बार मैं हाज़िर होने से बच नहीं सकता था। यह *मेरा* अंतिम संस्कार था।

छह बेचारे कमबख्तों ने ताबूत उठाया। मेरी बेटी ने पारंपरिक काला सूट ठुकरा दिया और उसकी जगह मुझे ट्रैकसूट पहना दिया। “आप जहाँ भी जा रहे हैं, वहाँ आपको आराम से रहना चाहिए,” उसने कहा। टेनिस के जूतों समेत। और मेरा फ़ोन, एक छोटी-सी थैली में बड़े सलीके से रखा हुआ। परलोक के लिए पिकनिक का सामान।

शव-वाहन काफ़ी आरामदेह था, हालाँकि पीछे बाईं ओर के शॉक एब्ज़ॉर्बर को गंभीर मरम्मत की ज़रूरत थी। हर गड्ढे पर मेरा बायाँ अंडकोष जाँघिए से बाहर फिसल जाता। ताबूत के अंदर रोशनी नहीं थी, इसलिए मैं उसे ठीक नहीं कर सका। अनंत काल के अँधेरे में ताज़ी हवा का एक झोंका।

चर्च के दरवाज़े पर उन्होंने मुझे लकड़ी के चार शहतीरों पर रख दिया। मेरी बस एक ही चिंता थी: उन्होंने मुझे ठीक से रखा है, या मैं आलू की बोरी की तरह लुढ़ककर नीचे गिर जाऊँगा? फिर मुझे याद आया: मैं तो पहले से ही ज़िंदगी के फ़र्श पर पड़ा था, मरा हुआ।

पादरी बोले। कुछ सच, बहुत सारी गढ़ी हुई बातें। फिर मेरे बारे में कुछ-न-कुछ पढ़ने वाले लोगों की परेड। तभी एक बूढ़ी औरत पास आई, ताबूत को चूमा, और पूछा: "इससे पहले कि आप इन्हें अंदर डालें, क्या मैं इन्हें चूम सकती हूँ?"

एक सहेली खड़ी हुई और बोली: "मेरे पति भी अंदर डालने से पहले हमेशा मुझसे यही पूछते थे। एक आखिरी चुंबन।" अहाहाहाह।

रस्म खत्म। क़ब्रिस्तान के लिए बस मैं और ड्राइवर निकले। पता सीधे ताबूत पर लिखा था: *कोडेरा क़ब्रिस्तान, शवगृह विंग, प्लॉट पैतालीस, खंड 23, दूसरी मंज़िल, पहला आला।* ग़लती की कोई गुंजाइश नहीं। मानवता विकसित हो चुकी थी: अब पुरुषों या महिलाओं के अलग हिस्से नहीं। बस मरे हुए लोग। कारगर।

उसने मुझे पहुँचाया, हाथ हिलाया, और चला गया। और मैंने सोचा: *अब मैं क्या करूँ?*

दो महिलाएँ—जिन्हें मरे कुछ साल हो चुके थे—पास से गुज़रीं और मुझे कॉफ़ी ब्रेक के लिए बुला लिया, जब तक अंतिम संस्कार सिंडिकेट परिषद नए आने वालों के लिए नए नियम मंज़ूर कर रही थी।

मैं उत्सुक था, पर थका हुआ। एक नई भूमिका, एक नई पूँजी, कुछ सीखने को, ताकि दुनिया बस एक ही बात कह सके:

मैं उत्सुक था, पर थककर चूर। मुझे मरे हुए एक दिन भी नहीं हुआ था और वे अभी से मुझे कागज़ी कार्रवाई थमा रहे थे। अनंत काल में भी ऑनबोर्डिंग की प्रक्रियाएँ थीं।

नांदो

आल्दिला स्ट्रीट, न्यूयॉर्क सिटी

सब कुछ होने से पहले की रात, मैंने थोड़ा भारी खाना खा लिया था। आलू के साथ तली हुई शिमला मिर्च, एक किलो की सूअर की टाँग, लाल वाइन के दो गिलास, और—बस शान से समापन करने के लिए—बोल्लोत्ती बीन्स के सलाद का एक कटोरा।

7 मई, 2058 का दिन था। मैं सिर्फ़ तिरानवे साल का था, पर मैं इसे दिखाता नहीं था—मतलब, इसका ढिंढोरा नहीं पीटता था। एक सच्चा कैलाब्रियाई: संकोची, दुराव-छिपाव वाला नहीं। यही मेरे होने का ढंग था। यही मैं था।

अहाहाहाह।

फिर वह हो गया: मैंने अपने शरीर को अब भी बिस्तर पर पड़ा देखा, और मैं उससे बाहर था, देख रहा था। मैं डेस्क की ओर बढ़ा, उसे चालू करने और एक कहानी लिखने—यह मैं इतने लंबे समय से करता आया था कि यह मेरा पसंदीदा शगल बन गया था। पर मेरे हाथ अब दिखाई देने वाली चीज़ों पर हुक्म नहीं चलाते थे।

मैं मर चुका था। मैं परलोक की राह पर था।

पहला सवाल जो मैंने खुद से पूछा, वह यह नहीं था कि मैं किससे मिलूँगा, न यह कि वहाँ कैसे पहुँचूँगा। नहीं। मेरे दिमाग में बस एक ही बात अटकी थी: **जो लोग मुझे जानते थे, वे मेरे जाने पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे?**

मैं उन्हें अभी से अपनी आँखों के सामने देख सकता था।

“वक्त्र तो हो ही गया था।” —वे जिन्होंने मुझे हमेशा झेला था।

“यह उसकी कोई चाल है।” —निराशावादी।

“अपनी ज़िंदगी सुनाने का उसका एक और तरीका।” —वर्डप्रेस वाली भीड़।

एआई तो कोई प्रतिक्रिया ही नहीं देंगे।

रिश्तेदार और दोस्त? वे तो मुझसे पहले ही यह सरहद पार कर चुके थे। मैं बस उनके पीछे-पीछे पहुँच रहा था।

कंधे पर रखे एक हाथ ने इशारा किया कि कोई मुझे लेने आया है। और हम उड़ने लगे—या कम से कम मुझे ऐसा लगा। पर पक्षियों की तरह नहीं, हवाई जहाज़ों की तरह नहीं, ऐसी किसी भी चीज़ की तरह नहीं जिसकी हमने कभी कल्पना की हो। न फ़रिश्तों के पंख, न फ़िल्मी आरोहण। वह सब तो बस एक फ़ॉर्मेट था जो हमें बेचा गया था।

यह सफ़र बिल्कुल अलग था।

मैं अपने कंधे पर रखे हाथ को देखने के लिए मुड़ा, और हम पहले ही नए घर में थे।

पार्सल पहुँचाने वाले फ़ेडएक्स से भी बेहतर। अहाहाहाह।

प्रवेश द्वार पर एक आदमी चेक-इन कर रहा था, और भीतर जाने के लिए मेरे पास मेरा नंबर था।

यहाँ “नंबर लो” वाली मशीन ख़त्म कर दी गई थी। कतार जैसी दिखने वाली हर चीज़ शैतान का प्रतिनिधित्व करती थी, और प्रतिनिधि के तौर पर सिर्फ़ उन्हीं को इजाज़त थी जिन्होंने ज़िंदगी में यही काम किया था। बस इतना ही।

मेरी बारी आई, और स्वागत का वाक्य था:

“अरे नहीं, आख़िरकार हम आपको यहाँ ले ही आए। बारह बार, बारह कोशिशें। आप हैं कौन?”

कोई ख़ास नहीं। बस कोई ऐसा, जिसकी आपको उम्मीद नहीं होती।

नांदो

अगली कड़ी ।

तो, मैं इस जगह पहुँच गया था, जिसके बारे में सिर्फ़ विधवा के बेटे जानते थे — कम से कम जब मैं ज़िंदा था। पर अब होना क्या था? कौन-सी घटनाएँ? मैं सीईओ को ढूँढ़ रहा था, पर वह मुझे मिल नहीं रहा था।

एक महिला पास से गुज़री, अच्छे कपड़ों में, बेहद शिष्ट। वह रुकी नहीं। उसने सबसे पास की सतह पर एक मुड़ा हुआ पर्चा छोड़ा और चलती रही।

मैंने उसे खोला। कक्ष। समय। अग्रणी कक्ष, 11:00।

कोई नक्शा नहीं। औज़ार मेरे पास पहले से थे।

मेरी ज़िंदगी का सिर्फ़ आखिरी दौर — बस 35 साल — समीक्षा के दायरे में था। मेरी किस्मत अच्छी थी। बाक़ी जो बकवास मैंने की थी, उसकी मियाद ख़त्म हो चुकी थी। मुझे किसी बात की न सफ़ाई देनी थी, न कुछ समझाना था।

मुझे गाड़ी चलाना नहीं आता, न कार, न पैदल — फिर भी मैंने खुद को कक्ष के अंदर पाया। और बोर्ड की मेज़ के चारों ओर मुझे कौन बैठा मिलता है?

मैं शर्त लगाकर कहता हूँ, कोशिश करके भी आप कभी यक़ीन नहीं करेंगे।

वह मैं हूँ, 5 साल का। और मैं रोने लगा — भावुक होकर नहीं, बल्कि इसलिए कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं वहाँ कैसे पहुँचा, या किस उम्र में।

एक जाना-पहचाना सवाल गूँजा:

“आपको याद है, जब मैंने आपसे पूछा था कि क्या आप 93 साल तक जीने को तैयार हैं?”

“हाँ,” मैंने जवाब दिया।

“और बाद में, जब मैंने पूछा था कि क्या आप अपने प्रियजनों को अपने से पहले जाते देखने का दुख सहने को तैयार हैं?”

“हाँ,” मैंने जवाब दिया।

“आप अब भी बेहद सुसंगत हैं। मैंने सीईओ से कहा था, पर उन्होंने मेरी बात पर यक़ीन नहीं किया। और अब हमें समझ नहीं आ रहा कि आपको रहने की जगह कहाँ दें।”

दांते ने डिवाइन कॉमेडी लिखी, पर उन्होंने आपकी श्रेणी का अनुमान नहीं लगाया था। अमेज़न के साथ बेज़ोस भी यह नहीं कर पाए। और गूगल लगभग 30 साल तक क्रैश रहा।

“हम पूरी तरह समझते हैं, लेकिन हमें समय दीजिए। हम आपसे स्टैंडबाय पर रहने का अनुरोध करते हैं।”

स्टैंडबाय। मुझे लगा था यह कोई मार्केटिंग शब्द है। फिर मैंने सोचा, कहीं यह कामसूत्र का भी कोई आसन तो नहीं। हम परलोक में थे, और मैंने अब तक यह मुहावरा नहीं सीखा था।

नांदो

अगली कड़ी ॥

यहाँ समय अलग ढंग से चलता है। मैंने यह तब जाना जब गिनने की कोशिश की कि मैं कितनी देर से इंतज़ार कर रहा था, और पाया कि वह संख्या बार-बार दिशा बदल रही थी।

फिर एक आवाज़ — इस बार उसकी नहीं। बस एक आवाज़, कक्ष के किसी भी कोने से नहीं।

“कक्ष 2। दोपहर 1:00 बजे।”

मैंने नहीं पूछा कि वहाँ कैसे पहुँचूँ। औज़ार मेरे पास पहले से थे।

आयोग यह तय करने के लिए इकट्ठा हुआ था कि मेरा क्या किया जाए। एक लंबी बैठक के बाद उन्होंने फ़ैसला सुनाया:

“आपको ONEDOLLAR.STORIE. ALDILA.’ का अनंतकाल संस्करण बनाने का आधिकारिक ज़िम्मा सौंपा जाता है। एक शर्त पर।”

“कौन-सी शर्त?”

“प्रकाशित करने से पहले हमें कहानियाँ पढ़नी होंगी।”

ऐसा कुछ मैं पहले भी झेल चुका था, पर यह रहने के लिए आखिरी जगह थी। और मुझे शांत मन से फ़ैसला करना था।

तो मैंने पूछा: “बदले में मुझे क्या मिलेगा?”

“आप क्या चाहते हैं?”

“बस 1 डॉलर।”

नांदो

अगली कड़ी ।।।

किसी मोड़ पर मैंने सोचा कि मुझे भूख क्यों नहीं लगती, मैं नहाता क्यों नहीं, दाढ़ी क्यों नहीं बनाता, सुबह की अपनी रोज़ की दिनचर्या क्यों नहीं करता। मैं कितना बेवकूफ़ था — बात तुरंत साफ़ हो गई: मेरे पास शरीर ही नहीं था, तो सँभालना क्या था?

और कोई दिखाई नहीं देता था। पर सब बस संकोची थे, और हर आत्मा के पीछे एक मिशन था जिसका वे ढिंढोरा नहीं पीटते थे।

फिर छत बोली। या फ़र्श। यहाँ दिशा का कोई मतलब नहीं।

“फ़्रेगा।”

और मैंने जवाब दिया: “माफ़ कीजिए, पर अगर शरीर ही चला गया, तो आपने उपनाम कैसे बचाकर रखा?”

आवाज़ ने झुँझलाकर तपाक से जवाब दिया: “जब हम पहले ही आपको किसी श्रेणी में नहीं डाल पा रहे, कहीं रख नहीं पा रहे, तो आप चाहते हैं कि हमारे पास जो इकलौता संदर्भ है, उसे भी मिटा दें? फिर हम आपकी पहचान कैसे करेंगे?”

“ठीक है। बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ।”

“हमें सूचना मिली है कि धरती के अगले सात दिनों में कुछ सबसे मशहूर अरबपति यहाँ पहुँचेंगे।”

“घूमने आ रहे हैं?” मैंने पूछा।

“यहाँ हम न शेयरहोल्डिंग करते हैं, न वॉल स्ट्रीट इटर्निटी। बस कभी-कभार अधिग्रहण की कोई बोली, पर उससे आपका कोई लेना-देना नहीं। वे इसलिए आ रहे हैं क्योंकि उनका समय पूरा हो गया है। पर हमें अंतिम संस्कार पर्यवेक्षक के रूप में आपकी सलाह चाहिए। आपको देखना है और रिपोर्ट करनी है कि मौत के बाद लोग उनके बारे में क्या कहते और सोचते हैं, और वे कैसा बर्ताव करते हैं।”

“इस अभियान के लिए आप मुझे क्या देंगे?”

“हमेशा की तरह: 1 डॉलर।”

“इस बार नहीं।”

“तो फिर आप क्या चाहते हैं?”

“फिर से गरीब पैदा होना, पहले की तरह। पर इस बार सचमुच अमेरिका में। कोई गलती नहीं।”

“क्यों?”

“धरती पर एक चीज़ है जिसकी कमी मुझे किसी भी और चीज़ से ज़्यादा खलती है।”

“औरतें?”

“नहीं।”

“तो फिर क्या?”

“मैनहोल की वह गंध, जब उनसे भाप उठती है। वही घर है। वही मेरी जगह है।”

नांदो

अगली कड़ी IV

उन्होंने मुझे सूची थमा दी, और सच कहूँ तो मैं हैरान था कि ये सारे अरबपति एक साथ मर गए थे। मैं उन्हें एक-एक करके कैसे सुनाता? इसके लिए तो अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अंदर खड़ा होना पड़ता, इसलिए मैंने एक छूट माँगी: एक बार में एक रिपोर्ट।

और निजी कारणों से मैं अंकल वॉरेन से शुरू करूँगा — मेरी जिलेट कभी उनकी थी, इतना शिष्टाचार तो उनका हक़ बनता था।

फिर मैं बाक़ियों की ओर बढ़ूँगा। पर आप जो सुनने वाले हैं, वह अनोखा है, और वह बस एक ही बात सिखाता है: हम एक अस्थायी पात्र भर हैं, कोई ऐसा समय नहीं जो कुछ भी समेटे हुए हो।

- **जेफ़ बेज़ोस का अंतिम संस्कार** → पैसा, सत्ता, विरासत, मीडिया
- **बिल गेट्स का अंतिम संस्कार** → तकनीक, नियंत्रण, परोपकार, बुद्धिमत्ता

• **एलन मस्क का अंतिम संस्कार** → व्यक्ति-पूजा, अराजकता, फ़ैनबॉय, मंगल

• **वॉरेन बफ़ेट का अंतिम संस्कार** → पुरानी पूँजी, उत्तराधिकार, ख़ामोशी

• **डोनाल्ड ट्रंप का अंतिम संस्कार** → संपूर्ण तमाशा, गुट, मीडिया सर्कस पढ़ने का आनंद लें।

नांदो

अगली कड़ी V

वॉरेन बफ़ेट का अंतिम संस्कार → पुरानी पूँजी, उत्तराधिकार, ख़ामोशी

यह बंद दरवाज़ों के पीछे हुआ। उम्मीद बस मुट्ठी भर लोगों की थी — आखिर, बर्कशायर के साथ वे बहुत सारा पैसा रखने वाले चंद लोगों के एक पात्र से ज़्यादा कुछ नहीं रहे थे, और उन्होंने कभी सचमुच कोई व्यापारिक उद्यम नहीं चलाया था, कम से कम सीधे तौर पर तो नहीं।

कमरा भरा, तो लाज़िमी तौर पर पत्रकारों और प्रेस से, दो-एक सहकर्मियों, दो सच्चे दोस्तों, रिश्तेदारों, और उम्र भर साथ रही उस लाज़िमी सेक्रेटरी से — वही, जिसके साथ वे कभी नहीं सोए। सब के सब एक अल्पविराम लपककर उसे एक लेख, एक टिप्पणी, घटना के भीतर एक घटना बना देने को तैयार। खुशक्रिस्मती से, उनमें से किसी ने किताब लिखने की कोशिश नहीं की।

अंकल वॉरेन ने, हमेशा की तरह, सबको पहले ही भाँप लिया था। और जब वे बोलते, सब सुनते — वैसे ही जैसे कोई उस दादा को सुनता है जो पोते-पोतियों को इकट्ठा करके उन्हें सवाना के जानवरों के बारे में बारीक़ से बारीक़ ब्योरे के साथ बताता है। बस फ़र्क़ इतना था कि उनका सवाना नेब्रास्का का उनका दफ़्तर था, और यह लगभग किसी को पता नहीं था।

किसी ने, होंठ हिलाए बिना फुसफुसाते हुए, बगल वाले से पूछा कि वह शेयर रखे रहना समझदारी है या बेच देना — एक ऐसी सहज वृत्ति जिसका कोई इलाज नहीं। और गुरु की सलाह हमेशा एक ही थी: अगर आप अपने पैसे को बाज़ार में मूल्य खोते देखने को तैयार नहीं हैं, तो घर बैठिए, और उसे पलंग के नीचे रख

दीजिए। मूल्य तो वह फिर भी खोएगा, पर कम से कम आपको हमेशा पता रहेगा कि कितना बचा है।

पादरी के प्रवचन के दौरान एक चिट्ठी आई — बस कुछ घंटे पहले — और उन्होंने उसे खुद पढ़ने की ज़िद की:

हम आपको कभी नहीं भूलेंगे। आप हमारी ज़िंदगी का सूचकांक थे और आज भी हैं, और आपकी सीखें नई पीढ़ियों तक पहले ही पहुँचाई जा चुकी हैं। क्योंकि आप हैं, और हमेशा रहेंगे, वह इंसान जिसने कहा था: अगर बाहर बारिश हो रही हो और आप पानी इकट्ठा करना चाहें, तो कभी छलनी लेकर बाहर मत जाइए।

अलविदा, अंकल।

नांदो

जिलेट का गढ़ा हुआ। अब भी आपका वफ़ादार भतीजा, अंकल वॉरेन।

अगली कड़ी VI

एलन मस्क का अंतिम संस्कार — व्यक्ति-पूजा, अराजकता, फ़ैनबॉय, मंगल

मुझे ज़्यादा बड़ी भीड़ की उम्मीद थी। इसके बजाय, मुझे ऐसे मैनेजर मिले जो लगभग राहत में दिख रहे थे — मानो एलन कोई मुश्किल से पचने वाला खाना रहे हों, कोई गरिष्ठ पकवान जो बार-बार गले तक लौट आता था। बहुत ज़्यादा पैसे वाला एक गरीब आदमी। यही थी ख़ामोश सुखी।

फुसफुसाती बातचीत में वही टेक: उनकी माँ — मॉडल, सफ़ाई करने वाली — और कैसे क्रिस्मत ने उस लड़के को धरती के सबसे अमीर आदमी का ताज पहनाया, फिर भी उनके पास कभी कोई स्थायी औरत नहीं रही जिसके नाम वे सब कुछ छोड़ जाते। हाइब्रिड, अपनी कंपनी की तरह। आधा जीनियस, आधी गड़बड़।

पत्रकार तो थे ही, ज़ाहिर है। मीडिया का सर्कस रेटिंग बटोर सकने वाला कोई भी अंतिम संस्कार कभी नहीं छोड़ता। रस्म वही पुरानी थी — कैमरे, फुसफुसाहटें, भीगे फूलों की गंध।

पर पादरी... पादरी ही कहानी का असली मोड़ थे।

एलन के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा: “वे एक वफ़ादार दोस्त थे। एक बार उन्होंने मेरी टेस्ला की बैटरी बदलवाने में मेरी मदद की और मुझे 2% की छूट दी। उसी पल की बदौलत मैं पादरी बना। और इसीलिए आज मैं यहाँ उनके साथ हूँ।”

हमें समझ नहीं आया कि हँसें, रोएँ या किसी मनोचिकित्सक को बुलाएँ। क्योंकि ठीक उसी वक्त **सैम ऑल्टमैन** धड़धड़ाते हुए अंदर आए — आँखें लाल, आवाज़ टूटी हुई — ताबूत पर गिर पड़े और चिल्लाए:

“कमीने कहीं के। तूने मुझे पर 130 अरब डॉलर का मुक़दमा ठोका। तू हार गया। और तूने मुझे यह तसल्ली तक नहीं दी कि मैं तुझे फ़ैसला पढ़कर सुना सकूँ।”

पुष्पचक्रों के बीच एक अलग नज़र आया: व्हाइट हाउस से भेजा गया कार्नेशन का एक अकेला फूल। भेजने वाले का कभी किसी को पता नहीं चला। या फिर सबको पता था और सबने न जानने का नाटक किया।

उनका ट्विटर — जो एक्स बना, जो पहेली बना — उनका हस्ताक्षर था। जन्म के दिन भी उन पर उसी की छाप थी, और जाने के दिन भी।

नांदो

अगली कड़ी VII

जेफ़्र बेज़ोस का अंतिम संस्कार → पैसा, सत्ता, विरासत, मीडिया

मैं पूरी शांति के साथ कहता हूँ कि यही वह अंतिम संस्कार था जिसने मुझे सबसे ज़्यादा उत्सुक किया — न **पैसे** की वजह से, न **सत्ता** की वजह से, न **विरासत** की वजह से, न **मीडिया** की वजह से — बल्कि इसलिए कि केंद्रीकृत प्रबंधन ने साम्राज्य के नंबर दो पर कभी कोई रोशनी पड़ने ही नहीं दी थी, एक ऐसा आदमी जिसकी वित्तीय और कर-संबंधी गड़बड़ियाँ दुनिया भर में बिखरी पड़ी थीं, जिस पर सरकारें नज़र रखे हुए थीं और जिसे सिर्फ़ इसलिए बर्दाश्त किया

जाता था कि वह अपने बुनियादी ढाँचों में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को रोज़गार देता था।

पर स्पष्टता की यह कमी हिसाब-किताब के भीतर भी झलकती थी — कभी पक्का नहीं, कभी दस्तावेज़ों से पुष्ट नहीं — वे हवाले और आँकड़े देते थे, पर प्रमाण के लायक दस्तावेज़ कभी नहीं।

और इसी तरह, प्रकाशन के मोर्चे पर, स्वतंत्रता की ओर एक छोटा-सा साहित्यिक पलायन शुरू हो चुका था, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि *बहुत और संदिग्ध से बेहतर, थोड़े और सुरक्षित।*

पर चर्च के भीतर लोग बेध्यान थे, दूसरे लोगों के दूसरे अंतिम संस्कारों की बातें कर रहे थे, और मेरे कान में कुछ औरतों के एक झुंड की बात पड़ी: *“सुना तुमने? वह इतालवी लेखक भी चल बसा — वही जिसने ‘अमेरिका’ लिखी थी और दुनिया की भाषाएँ बोलता था, वे मशहूर 225 ज़बानें। वही जिसे हम सब प्यार करते थे क्योंकि वह बदले में पैसे माँगे बिना देता था।”*

खैर, यह बात मुझे छू गई। यह उन **मरणोपरान्त सफलताओं** में से एक थी जिन्हें इंसान आम तौर पर तुरंत और तत्काल प्रभाव से नहीं पहचानते। बस एक औरत का आपको न भूलना काफ़ी है — और फिर वायरस शुरू हो जाता है।

जेफ़ के बारे में पादरी ने कहा: *“हम दोनों गंजे हो रहे थे। वे अपनी मर्ज़ी से, मैं भी।”*

शुभ यात्रा।

नांदो

अगली कड़ी VIII

डोनाल्ड ट्रंप का अंतिम संस्कार → संपूर्ण तमाशा, गुट, मीडिया सर्कस

अमेरिकी ग़िज़ली भालू — मैं उन्हें यही कहा करता था — मौत में भी केंद्र में बने रहने में कामयाब रहे। सुर्खियों के लिए ही जन्मा एक जीव, एक तरफ़ हट जाना जिसके बस में नहीं था, तब भी नहीं जब परदा गिर चुका था।

हमने अनोखे साल जिए थे। उन्होंने अमेरिका को उसकी अपनी सरहदों से आगे तक खींच दिया, पचास राज्यों को पचास राज्य और ऊपर से दो सौ सात महत्वाकांक्षाएँ बना दिया, फिर पीछे हट गए। संयम का एक दुर्लभ उदाहरण — या बस किस्मत का साँस लेने के लिए ठहर जाना।

वेनेजुएला वाला अध्याय था, जब मादुरो का पतन एक ऐसे दृश्य में हुआ जो इतिहास से ज़्यादा सिनेमा लगता था। फिर ग्रीनलैंड से थोड़े समय का मोह। फिर हिंद महासागर, मानो किसी ऐसे निजी कंपास के पीछे चल रहे हों जिसे सिर्फ़ वही पढ़ सकते थे।

वे क्षितिज को हमेशा थोड़ा और आगे खिसका देते थे, तब भी जब किसी ने कहा न हो।

पुष्पचक्रों के बीच एक अलग नज़र आया — कार्नेशन का एक अकेला फूल। भेजने वाले का कोई नाम नहीं। या तो किसी को पता नहीं था, या सबको पता था और सबने चुप्पी चुनी।

उनका ट्विटर, जो एक्स बना, जो पहेली बना, उनका असली हस्ताक्षर था। जिस दिन वे कमरे में दाखिल हुए, उस दिन उन पर उसी की छाप थी, और फिर उस दिन भी जिस दिन वे चले गए।

अलविदा, राष्ट्रपति महोदय।

नांदो

अगली कड़ी IX

बिल गेट्स का अंतिम संस्कार → तकनीक, नियंत्रण, परोपकार, बुद्धिमत्ता

ज़िंदगी के सौभाग्य गढ़े नहीं जाते — उन्हें **स्वीकारा** जाता है और फिर सही पकड़ के साथ **सँभाला** जाता है। बिल ठीक यही थे: एक अवसर जिसका अच्छा इस्तेमाल हुआ, होने का एक ढंग जो एक शैली बन जाता है, एक नफ़ासत, कुछ ऐसा जिसे आप भूल ही नहीं सकते।

मैं वह पहली बार कभी नहीं भूलूँगा जब मैं कैपस के बाहर उनसे मिला था। मुझे नहीं पता था कि वे कौन हैं, वे गलती से मुझसे टकरा गए, और चूँकि मैं जवान और बेवकूफ़ था, मैं उन्हें मारने ही वाला था। पर उन्होंने — दूरदर्शी, सजग, सद्गुणी और पैनी समझ वाले इंसान — मेरी ओर देखा और कहा: *“बच्चे, दो बियर का बिल चुका दो, मेरे पास पैसे नहीं हैं।”* तो मैंने बीस डॉलर निकाले, और लड़की ने तस्वीर खींच ली।

कैसा **कमीना** निकला — और यह मुझे बरसों बाद जाकर पता चला कि वे कौन थे।

उनके अंतिम संस्कार में क्रदम रखते ही मुझे ऐसा लगा मानो किसी पारिवारिक जमावड़े में दाखिल हो रहा हूँ, बस फ़र्क़ इतना था कि मैं उनकी विरासत का हिस्सा नहीं था, और उसकी ओर मेरी कभी कोई महत्वाकांक्षा भी नहीं रही थी। लोग फुसफुसाते रहे कि वे कौन थे, क्या थे, और उनके उस शांत, संयत अंदाज़ के पीछे एक ऐसा इंसान था जिसकी उदारता दिखाई देने वाली चीज़ों से कहीं आगे तक जाती थी।

प्रवचन के दौरान पादरी ने कहा: *“उनकी बदौलत हमने चर्च को डिजिटल कर दिया है, और अब पाप-स्वीकारोक्तियाँ चुपके से रिकॉर्ड होकर सीधे पोप के पास भेजी जाती हैं।”* उपस्थित लोगों में एक सहमी-सी फुसफुसाहट फैल गई — जब तक उन्होंने यह नहीं जोड़ा कि वे मज़ाक कर रहे थे: *“वे रोम नहीं जातीं। वे सीधे सीआईए जाती हैं।”*

पत्रकार असामान्य रूप से शालीन थे। बहुतों ने उनके लिए काम किया था, और सभी बार-बार खामोशी की गुज़ारिश कर रहे थे, क्योंकि उस ठहरे हुए समय के भीतर **बिल का ताबूत बोल रहा था।**

अलविदा, मेरे दोस्त।

नांदो

न्यूयॉर्क सिटी — उपसंहार

आखिर में, सब कुछ यँ ही बंद होता है: न धूमधाम, न तालियाँ, न कोई आपको दरवाज़े तक छोड़ने वाला। बस आप, कहीं लिखा आपका नाम, और एक

गलियारा जो ख़त्म होने से इनकार करता है।

यह जानना कि आपके मरने पर लोग क्या कहते हैं, एक ऐसा विशेषाधिकार है जो किसी के पास नहीं होना चाहिए। यह अंत के रूमानी ख़याल को बर्बाद कर देता है। यह आपको दिखाता है कि सच हमेशा देर से आता है, जब वह किसी काम का नहीं रहता।

मैं ताबूतों के बीच परलोक के किसी कर्मचारी की तरह चलता रहा, एक ऐसी रिपोर्ट लिखने के काम के साथ जिसे कभी कोई नहीं पढ़ेगा। और जब आख़िरकार मेरे बारे में फ़ैसला आया, मैं हिचकिचाया नहीं: **मैंने औरत बनकर लौटना चुना।** सबसे ताक़तवर, सबसे पैनी, सबसे रणनीतिक। वे दुनिया को खुद को कमज़ोर कहने देती हैं, बस यह देखने के लिए कि कौन इस झाँसे में आता है।

फिर उन्होंने पूछा कि मैं कहाँ दोबारा जन्म लेना चाहता हूँ। मैंने उन्हें बात पूरी नहीं करने दी: **अमेरिका।** कोई भी राज्य, कोई भी शहर। मुझे बस एक गारंटी चाहिए थी: कि इस बार की खेप पेशेवर लोग सँभालेंगे, और डिलीवरी के वक़्त वे हस्ताक्षर माँगेंगे।

तब मुझे पता होगा कि मैं सचमुच पहुँच गई हूँ। उस जगह, जहाँ मैं जिऊँगी, और जहाँ मैं फिर से मरूँगी। उसी शांति के साथ, उसी व्यंग्य के साथ, उसी छोटे क़दम के साथ, हमेशा की तरह।

समाप्त।

नांदो

टिप्पणी

“हम सबमें एक बात साझा थी — और बेवकूफ़ी में यह मत सोच बैठिए कि वह पैसा था। हम सब मर चुके थे, पर कभी भुलाए नहीं जाएँगे सिर्फ़ वे, जिन्होंने कहानी सुनाई।”

फर्दिनांदो फ्रेगा